17
रामबक्ष
(जन्म : 1951 ई.)

जीवन परिचय -

रामबक्ष का जन्म नागौर जिला के चिताणी गाँव में 4 सितम्बर 1951 ई. को हुआ। आरंभिक शिक्षा गाँव एवं आसपास के विद्यालयों में हुई। मैट्रिक से स्नातकोत्तर तक की शिक्षा जोधपुर में पूरी हुई। पीएच.डी. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से करने के बाद ये रोहतक, जोधपुर, इग्नु विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य करते रहे। सम्प्रति जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भाषा संस्थान में प्रोफेसर पद पर कार्यरत हैं।

इनकी कुछ चर्चित पुस्तकें – 'प्रेमचन्द', 'प्रेमचन्द और भारतीय किसान', 'दादूदयाल', समकालीन हिंदी आलोचक और आलोचना' हैं।

पाठ परिचय -

मध्यकाल भारतीय सनातनता का एक उज्ज्वल अध्याय है। संत–कवियों ने सार्वभौम मानवता के लिए एक सहज–सामान्य पथ की वकालत की। दादू की बानी सदियों से राजस्थान के जनमानस की सामूहिक स्मृति का हिस्सा रही हैं। कबीर के समान इनमें खण्डन–मण्डन की प्रवृत्ति नहीं मिलती। देशाटन से प्राप्त अनुभवों को दादू ने प्रेम के सरस धरातल पर मर्मस्पर्शिनी भावों के साथ परोस दिया है। लेखक ने इस आलेख में दादू दयाल की प्रासंगिता एवं उनके उपदेशों का जीवनीपरक मूल्यांकन प्रस्तुत किया है।

लोक संत दादू दयाल

शिरोमणि संत दादू दयाल का जन्म फागुन सुदी अष्टमी बृहस्पतिवार संवत् 1601 (सन् 1544 ई.) को हुआ माना जाता है। दादू के जन्म स्थान के बारे में विद्वान एक मत नहीं हैं। दादू पंथी भक्तों की मान्यता है कि वह एक छोटे–से बालक के रूप में, अहमदाबाद के निकट, साबरमती नदी में बहते हुए पाए गए। इनका लालन–पालन लोदीराम नामक नागर ब्राह्मण ने किया। इनकी माता का नाम बसीबाई था। जन्मभूमि के संबंध में विद्वानों में भले ही मतभेद रहे हों लेकिन इनकी साधना भूमि निश्चित रूप से राजस्थान है।

मध्यकालीन निर्गुण संत परंपरा के अधिकांश कवियों ने हिन्दू समाज के जात–पाँत की व्यवस्था से अपनी असहमति जतायी थी। दादू भी इसके अपवाद नहीं थे। कई बार स्वयं

इनके जिज्ञासु भक्त भी यह पूछ लेते थे कि महाराज, आपकी जाति क्या है? ऐसे जिज्ञासु भक्तों को संबोधित करते हुए दादू ने कहा –

दादू कुल हमारै केसवा, सगात सिरजनहार।
जाति हमारी जगतगुर, परमेस्वर परिवार।।
दादू एक सगा संसार में, जिन हम सिरंजे सोइ।
मनसा बाचा क्रमनां, और न दूजा कोई।।

यहाँ दादू ने अपनी विचार–प्रणाली को व्यक्त करते हुए कहा है कि मेरे सच्चे सम्बन्ध तो ईश्वर से हैं। और इसी सम्बन्ध से मेरा परिचय है। परिवार में बद्ध व्यक्ति अपने सगे–सम्बन्धियों के लिए छल–कपट करता है। उसके मन में अपने–पराये की भावना आ जाती है। दादू इसे संसार की 'माया' और संसार से 'मोह' की संज्ञा देते हैं। दादू अपने आपको इनसे मुक्त कर चुके थे, वह संसार में रहते हुए भी सांसारिक बंधनों को काट चुके थे। अतः निरर्थक जात–पाँत की लौकिक भाषा में अपना वास्तविक परिचय कैसे देते?

संतों ने अपनी रचनाओं में गुरु की महिमा का विस्तार से बखान किया है। अतः यह जानना भी हमारे लिए आवश्यक है कि इनके गुरु कौन थे? लेकिन इस तथ्य की प्रामाणिक जानकारी अनुपलब्ध है। जन गोपाल की ''श्री दादू जन्म लीला परची'' के अनुसार ग्यारह वर्ष की अवस्था में भगवान ने एक वृद्ध के रूप में दर्शन देकर इनसे एक पैसा माँगा। फिर इनसे प्रसन्न होकर इनके सिर पर हाथ रखा और इनके सारे शरीर पर स्पर्श करते हुए इनके मुख में ''सरस पान'' भी दिया। दादू पंथियों के अनुसार बुड्ढन नामक एक अज्ञात संत इनके गुरु थे। जन गोपाल के अनुसार बचपन के ग्यारह वर्ष तक बीत जाने के बाद, इनके बुड्ढे के रूप में गुरु के दर्शन हुए। दादू ने अपनी वाणी में गुरु की महिमा का गान तो बहुत किया है, लेकिन उनका कहीं नाम नहीं लिया है।

ऐसी मान्यता है कि वे अठारह वर्ष की अवस्था तक अहमदाबाद में रहे, छह वर्ष तक मध्य प्रदेश में घूमते रहे और बाद में सांभर (राजस्थान) में आकर बस गए। सांभर आने से पहले उन्होंने क्या किया था और कहाँ–कहाँ भ्रमण कर चुके थे, इसकी प्रामाणिक सूचना हमें नहीं मिलती। जन गोपाल की ''परची'' के अनुसार दादू तीस वर्ष की अवस्था में सांभर में आकर रहने लगे थे। सांभर–निवास के दिनों के बाद की उनकी गतिविधियों की थोड़ी–बहुत जानकारी मिलती है। सांभर के बाद वह कुछ दिनों तक आमेर (जयपुर के निकट) रहे। यहाँ पर अभी भी एक ''दादू द्वारा'' बना हुआ है। कुछ लोगों का कहना है, दादू ने फतेहपुर सीकरी में अकबर से भेंट की थी और चालीस दिनों तक आध्यात्मिक विषयों की चर्चा भी करते रहे थे। अन्य संतों की तरह दादू दयाल ने भी काफ़ी देश–भ्रमण किया था। विशेषकर उत्तर भारत (काशी), बिहार, बंगाल और राजस्थान के भीतरी भागों में लम्बी यात्राएँ की थीं। अन्त में, ये नराणा (राजस्थान) में रहने लगे, जहाँ उन्होंने अपनी इहलीला समाप्त की। दादू की इच्छानुसार उनके शरीर को भैराना की पहाड़ी पर स्थित एक गुफा में रखा गया जहाँ इन्हें

समाधि भी दी गई। इसी पहाड़ी को अब ''दादू खोल'' कहा जाता है, जहाँ उनकी स्मृति में अब भी मेला लगा करता है।

सांभर से ही दादू दयाल की भक्ति–साधना आरम्भ होती हैं। यहीं से उन्होंने उपदेश देने शुरू किए थे, और यहीं पर उन्होंने 'पर ब्रह्म सम्प्रदाय' की स्थापना की थी। जो दादू की मृत्यु के बाद 'दादू–पंथ' कहा जाने लगा। दादू ने अपनी रचनाओं में अपने परिवार और पारिवारिक स्थिति का जिक्र किया है। उन्होंने लिखा है –

दादू रोजी राम है, राजिक रिजक हमार।
दादू उस परसाद सौं, पोष्या सब परिवार।।

ऐसा लगता है कि किसी जिज्ञासु व्यक्ति ने दादू से सीधा सवाल पूछा था कि आपका खाना–पीना कैसे चलता है? आप अपने परिवार का भरण–पोषण कैसे करते हैं? अर्थात् आपकी आय के साधन क्या हैं? यहाँ तो चारों ओर अभाव ही अभाव दिखाई दे रहा है। इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए दादू ने कहा कि राम ही मेरा रोज़गार है, वही मेरी सम्पत्ति है, उसी राम के प्रसाद से परिवार का पोषण हो रहा है। इन पंक्तियों से यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि यहाँ ऐश्वर्य का बोलबाला नहीं, गरीबी का साम्राज्य है। यह बात यहाँ रेखांकित करने लायक है कि दादू को अपनी गरीबी से कोई शिकायत नहीं है, इसे सहज जीवन स्थिति मानकर उन्होंने स्वीकार कर लिया है। गरीबी की पीड़ा का बोध और उससे उत्पन्न आक्रोश दादू की रचनाओं में कहीं भी नहीं मिलता।

दादू के जीवन काल में ही उनके अनेक शिष्य बन चुके थे। उन्हें एक सूत्र में बाँधने के विचार से एक पृथक् सम्प्रदाय की स्थापना होनी चाहिए, यह विचार स्वयं दादू के मन में आ गया था। और इसलिए उन्होंने सांभर में 'पर ब्रह्म सम्प्रदाय' की स्थापना कर दी थी। दादू की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों ने इस सम्प्रदाय को 'दादू–पंथ' कहना शुरू कर दिया। आरम्भ में इनके कुल एक सौ बावन शिष्य माने जाते रहे। इनके शिष्यों के थांभे प्रचलित हुए। इनके थांभे अब भी अधिकतर राजस्थान, पंजाब व हरियाणा में हैं। इस क्षेत्र में अनेक स्थानों पर दादू–द्वारों की स्थापना की गई थी। उनके शिष्यों में गरीबदास, बधना, रज्जब, सुन्दरदास आदि प्रसिद्ध हुए।

संत दादू दयाल के स्मारक रूप विशिष्ट स्थानों में सर्वप्रथम स्थान करडाला वा कल्याणपुर प्रसिद्ध हैं। जहाँ उन्होंने पहली बार काफ़ी समय तक साधना की थी। इस बात का परिचय दिलाने के लिए वहाँ उनकी एक 'भजन शिला', वर्तमान है। वहाँ पर पहाड़ी के नीचे की ओर एक दादू द्वारा भी बना दिया गया है जिसे, उसी कारण महत्त्व दिया जाता है। करडाला के अतिरिक्त सांभर में भी दादू जी की एक छतरी बनी हुई है, जो उनके रहने की पुरानी कुटिया का प्रतिनिधित्व करती है और पीछे वहाँ पर एक विशाल मंदिर भी बना दिया गया है। सांभर के अनन्तर अधिक समय तक उनके निवास करने का स्थान आमेर समझा जाता है, जहाँ पर एक सुन्दर दादू द्वारा निर्मित है। परन्तु इन सभी से अधिक महत्त्व नराणे को दिया जाता है, जहाँ पर अभी तक वह खेजड़े का वृक्ष भी दिखलाया जाता है, जहाँ वे

बैठा करते थे। उसी के समीप एक 'भुजनशाला' है तथा एक विशाल मन्दिर भी बना हुआ है। यहाँ का दादू द्वारा सर्वप्रमुख माना जाता है। दादू जी का शव, जहाँ उनका देहांत हो जाने पर, डाला दिया गया था, वह भराणे का स्थान भी उनके अन्तिम स्मारक के रूप में वर्तमान है। वहाँ पर भी एक चबूतरा बना दिया गया है और पूरा स्थान 'दादू खोल' के नाम से भी अभिहित किया जाता है। कहते हैं कि यहीं कहीं पर उनके कुछ बाल, तूँबा, चोला तथा खड़ाऊँ भी अभी तक सुरक्षित हैं। कल्याणपुर, साँभर, आमेर, नराणा व भैराणा 'पंचतीर्थ' भी माने जाते हैं।

उनके स्मारक के रूप में दो मेले भी लगा करते हैं। इनमें से एक नराणे में प्रति वर्ष फागुन सुदी पंचमी से लेकर एकादशी तक लगा करता है, जिनमें प्रायः सभी स्थानों के दादू पंथी इकट्ठे होते हैं। दूसरा मेला भैराणे में फागुन कृष्ण तृतीया से फागुन सुदी तृतीया तक चलता रहता है।

दादू ने अपने शिष्यों को उपदेश दिया की परनिंदा न किया करें। क्योंकि निंदा तो वह व्यक्ति करता है, जिसके हृदय में राम का निवास नहीं है। दादू को बड़ा आश्चर्य होता है कि लोग कैसे निस्संकोच रूप से दूसरे की निंदा कर देते हैं –

न्यंदत सब लोग विचारा, हमकौं भावे राम पियारा।।
नरसंसै न्रिदोष लगावै, ताथें मोकौं अचिरज आवे।।
दुवध्या दोइ पष रहताजे, तासनि कहत गये रे ये।।
निरवैरी निहकामी साध, तासिरि देत बहुत अपराध।।
लोहा कंचन एक समान, तासनि कहैं करत अभिमान।।
न्यंदा स्तुति एक करि तौले, तासौं कहै अपवाद हि बोलें।।
दादू निंदा ताकौं भावै, जाकै हिरदे राम न आवै।।

दादू इतने शांत स्वभाव के थे कि किसी विवाद में उलझे ही नहीं। निंदा–स्तुति को उन्होंने समभाव से ग्रहण कर लिया था। उनके शिष्य हिन्दू और मुसलमान दोनों थे। उन्होंने अपने आचरण और उपेश द्वारा पूरी मानवता के लिए एक समान पथ का आविष्कार किया। उन्होंने अपने विरोधियों से बहस कम की और समर्थकों को सलाह ज्यादा दी है।

विक्रम संवत् 1660 (सन् 1603 ई.) जेठ बदी अष्टमी शनिवार को इन्होंने अपनी इहलीला समाप्त की।

कठिन शब्दार्थ

जिज्ञासु	–	जानने की इच्छा रखने वाला
लौकिक	–	सांसारिक
सिरजनहार	–	निर्माण करने वाला
दूजा	–	दूसरा

इहलीला	–	इस लोक का जीवन
स्मारक	–	किसी के स्मृति–रक्षा के अभिप्राय से संस्थापित भवन
सुदी	–	शुक्ल पक्ष
बदी	–	कृष्ण पक्ष
कंचन	–	स्वर्ण
स्तुति	–	प्रशंसा

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. दादू का जन्म स्थान है :–
   (क) अहमदाबाद (ख) साँभर (ग) काशी (घ) नराणा
2. दादू के प्रसिद्ध शिष्य हैं –
   (क) गरीबदास (ख) रज्जब (ग) सुन्दरदास (घ) उपर्युक्त सभी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. दादू का जन्म कहाँ हुआ?
4. दादू के माता–पिता का नाम क्या था?
5. दादू के गुरू का नाम क्या था?
6. दादूपंथ के पंचतीर्थ का नाम लिखें।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

7. दादू ने अपनी जाति क्या बताई थी?
8. दादू के गुरु परम्परा के बारे में क्या मान्यता है?
9. 'दादू खोल' से क्या आशय है?
10. दादू ने निन्दा–स्तुति के बारे में क्या कहा?

निबंधात्मक प्रश्न –

11. दादू ने अपने शिष्यों को क्या शिक्षा दी?
12. दादू के देशाटन एवं उनसे जुड़े पावन तीर्थों पर प्रकाश डालिए।
13. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
    (क) दादू ने कहा राम ही मेरा रोजगार है..... कहीं नहीं मिलता।
    (ख) मेरे सच्चे सम्बन्ध ..... कैसे देते?